फरीदाबाद
मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
<http://www.faridabad majdoorsamachar.blogspot.com>

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

नई सीरीज नम्बर 258 1/– दिसम्बर 2009

हरित कैंसर से जी एम प्लेग की ओर
भोजन को अधिकाधिक जहरीला बनाती सामाजिक प्रक्रिया

✶ भटिण्डा और बीकानेर के बीच चलती सवारी गाड़ी से हर रोज करीब एक सौ कैंसर रोगी यात्रा करते हैं। स्थानीय लोग इसे कैंसर ट्रेन कहने लगे हैं। पंजाब भारत में हरित क्रान्ति का केन्द्र था और लुधियाना, मुक्तसर, भटिण्डा जिले इसका प्रमुख क्षेत्र। संकर-हाइब्रिड बीज, रसायनिक उर्वरक, कीटनाशक तथा खरपतवार नाशक दवाईयाँ और अधिक पानी का सिंचाई के लिये प्रयोग हरित क्रान्ति के आदि व अन्त थे-हैं। रसायनिक उर्वरकों का भारत में प्रयोग 1950-51 में 70 हजार टन था जो 2006-07 में 2 करोड़ 20 लाख टन हो गया। खाद्यान्न उत्पादन बढा पर इन पचास वर्षों में धरती बुरी तरह क्षतिग्रस्त हुई। अब धँड़ल्ले से रसायनों का प्रयोग भी खाद्यान्न उत्पादकता को बढा नहीं पा रहा। भूजल स्तर लगातर गिरता जा रहा है.... लुधियाना, मुक्तसर, भटिण्डा जिलों में 57 से 160 फुट की गहराई तक पानी में यूरिया से आये नाइट्रेट की मात्रा सुरक्षित सीमा से कई गुणा ज्यादा हो गई है। नाइट्रेट युक्त पानी पीने से पेट, आंत, पित्त, गर्भाशय, यकृत, मूत्राशय के कैंसर होते हैं। नवजात शिशुओं के शरीर का नीला पड़ना........ रसायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों, खरपतवार नाशकों का उत्पादन भोपाल जैसे ताण्डव लिये है और इनकी खपत..... इनकी खपत नीले नवजात और कैंसर ट्रेनें लिये है। (जानकारियाँ सुश्री सीमा जावेद के 1.12.09 के 'आज समाज' में लेख से)

✶ इधर प्रगति-विकास के लिये कृषि क्षेत्र में दूसरी क्रान्ति की घोषणायें हो रही हैं..... अनुसन्धान जारी हैं, वैज्ञानिक जुटे हैं। इस समय जोर नये बीजों पर है। टमाटर के बीज में मछली के बीज का चुनिन्दा जीन, आलू के बीज में मेंढक के बीज का चुनिन्दा अंश, चावल के बीज में सूअर के बीज का चुनिन्दा जीन...... इसे अंग्रेजी में जेनेटिक्ली मोडिफाई करना कहते हैं और ऐसे बीजों को जी एम बीज। अमरीका में बीस वर्ष से जी एम बीजों से मक्का, सोयाबीन आदि की फसलें ली जा रही हैं। अधिक उपज वाली यह फसलें मुख्यतः मुर्गी, सूअर, गाय की खुराक बनती हैं..... माँस बढाने के लिये हैं। इन बीस वर्षों में अमरीका में एलर्जी, कैन्सर आदि बीमारियों में भारी वृद्धि हुई है। यूरोप में जी एम उपज पर रोक लगा दी गई है। भारत में जी एम कपास (बी टी कॉटन) के बाद अब जी एम बैंगन दस्तक दे रहा है और जी एम भिण्डी, जी एम बन्दगोभी, जी एम फूलगोभी, जी एम ज्वार, जी एम मूँगफली, जी एम सरसों,.... पंक्ति में हैं। कृषि में यह दूसरी क्रान्ति महामारी प्लेग को आमन्त्रण है। आँगनवाड़ियों में क्या जी एम भोजन बँटता है ? (सम्पर्क : सुश्री नीला हर्डीकर, पंचायती धर्मशाला ओली, मुरैना-476001)

व्यक्ति आते-जाते हैं। दल बदलते रहते हैं। नीतियाँ बदलती हैं। जारी है जल-थल-नभ का प्रदूषण, बढ रहा है प्रदूषण। बात सामाजिक व्यवस्था की, बात सामाजिक प्रक्रिया की। क्या है यह सामाजिक प्रक्रिया ?

– धुँधले हैं इस सामाजिक प्रक्रिया के आदि स्रोत। मानव द्वारा अपने को पृथ्वी से, प्रकृति से अलग देखने लगने के चिन्ह काफी प्राचीन हैं। अंश द्वारा स्वयं को सम्पूर्ण से अलग करना दोहन का आधार, शोषण का प्रस्थान-बिन्दू लगता है।

– पशुओं को नाथने का अगला चरण मनुष्यों को दागना बना। स्वामियों और दासों के उदय ने ऊँच-नीच वाली प्रक्रिया को, इस सामाजिक प्रक्रिया को आकार दिया।

– शोषण इस सामाजिक प्रक्रिया की धुरी बना। शोषण के लिये नियन्त्रण एक अनिवार्य आवश्यकता है। और, नियन्त्रण के लिये शस्त्र तथा शास्त्र जरूरी हैं। शोषण की अन्य अवस्थाओं-व्यवस्थाओं से होते हुये ऊँच-नीच वाली सामाजिक प्रक्रिया वर्तमान में लाई है।

– वर्तमान है मण्डी-मण्डी-मण्डी। स्वयं के तथा परिवार के श्रम से मण्डी के लिये उत्पादन का घुटना-मिटना। मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन का सर्वग्रासी प्रसार। ऊँच-नीच वाली सामाजिक प्रक्रिया आज मण्डी की चारित्रिकता लिये है।

– सुरक्षा का पहलू हो चाहे भोजन का, या फिर सन्तान का, मण्डी के नियम हावी-प्रभावी हैं। इसलिये सुरक्षा के उपाय विनाश के साधन और भोजन का प्रबन्ध जहर के जुगाड़ बने हैं....

शोषण के लिये दमन और दमन के प्रबन्ध के लिये शोषण की बन्द गली में क्रियाशील यह सामाजिक प्रक्रिया अनेकानेक विरोधों को जन्म देती है।

– दासों के विद्रोह। भूदासों की बगावतें। दस्तकारों-किसानों के तूफानी उफान। मजदूरों की धधकती हलचलें।

– परिवर्तन। बदली अवस्था-व्यवस्था। पर जारी है ऊँच-नीच वाली सामाजिक प्रक्रिया।

-- गौण हैं व्यक्ति-विशेष। गौण हैं दल-विशेष। गौण हैं क्षेत्र-विशेष। गौण हैं स्वरूप-विशेष। यह अधिकाधिक स्पष्ट होता जा रहा है।

– निजी सम्पत्ति को गौण स्थान पर धकेल चुकी मण्डी। निजी सम्पत्ति को मिटाने की ओर अग्रसर मण्डी। संस्थागत सम्पत्ति को स्थापित करती मण्डी। सर्वग्रासी बनी संस्थायें-कम्पनियाँ-इन्सटीटयुशन्स...... मजदूरों को केन्द्रीय भूमिका में ले आई हैं।

आज कार्यसूची पर आ गई है ऊँच-नीच वाली सामाजिक प्रक्रिया। क्या है यह और क्या नहीं है पर मन्थन बढ रहा है, और बढाने की आवश्यकता लगती है।

स्वयं को श्रेष्ठ घोषित करते, सब कुछ पर विजय प्राप्त करने की इच्छा रखते, हर एक को अपने अधीन करने को आतुर मानव अपने स्वयं के अस्तित्व को संकट में ला चुके हैं। अपने को प्रकृति का अंश स्वीकार करना, प्रकृति से सामंजस्य स्थापित करने को जीवन का सार स्वीकार करना नई समाज रचना के लिये, नई सामाजिक प्रक्रिया के लिये आधार लगता है।■

अनुरोध

फरीदाबाद में 10-12 जगह और ओखला (दिल्ली) तथा उद्योग विहार (गुड़गाँव) में 'मजदूर समाचार' बाँटने में हमें हर महीने 15 दिन लगते हैं। बाँटने में सहायता की जरूरत है। अपनी सुविधा अनुसार आप एक अथवा अधिक स्थानों पर बँटवाने में सहयोग कर सकते हैं। स्थान तथा दिन के बारे में हम से सम्पर्क करें। 'मजदूर समाचार' के कोई संवाददाता नहीं हैं। समय हो तो अखबार लेते समय अपनी बातें बतायें। पहले से लिख कर रखी सामग्री दें या फिर पत्र डालें।

हमारा प्रयास 'मजदूर समाचार' की महीने में 7000 प्रतियाँ फ्री बाँटने का है। इच्छा अनुसार रुपये-पैसे के योगदान का स्वागत है।

दर्पण में चेहरा-दर-चेहरा

चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

सेन्डेन विकास मजदूर : "प्लॉट 65 सैक्टर-27 ए स्थित फैक्ट्री में हम स्थाई मजदूरों द्वारा दिवाली पर मिठाई व उपहार लेने से इनकार का असर हुआ है। मैनेजमेन्ट ने एक की जगह दो वर्दी दे दी हैं, जैकेट व जूते भी दे दिये हैं। और, उपहार में 551 रुपये की जगह 1151 रुपये दिये हैं।"

स्काईटोन इलेक्ट्रीकल्स श्रमिक : "42-43 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 14 अक्टूबर को 75 मजदूर श्रम विभाग गये तब श्रम निरीक्षक के सामने ठेकेदारों के जरिये रखे 200 मजदूरों को सरकार द्वारा अकुशल श्रमिक के लिये निर्धारित न्यूनतम वेतन, 3914 रुपये दिये थे हालाँकि हम में से कई लोग मशीनें चलाते हैं। और फिर, सितम्बर में किये ओवर टाइम के पैसे दिये तब कुछ मजदूरों के 400-700 रुपये काट लिये – फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। गेट पास बन्द कर दिया, गेट पर मिलने आये से मुलाकात रोक दी, एक दिन नहीं आने पर ब्रेक करने लगे। अक्टूबर माह की पे-स्लिप 3914 रुपये की बनाई पर 3400-3500 देने लगे तो कुछ ने गलतफहमी में ले लिये। इन 3400-3500 में से ही ई.एस.आई. व पी.एफ. राशि काटी थी। कम तनखा लेने से इनकार करने पर 13 नवम्बर को कम्पनी ने 150 मजदूरों को गेट पर रोक दिया और बोले कि 3400-3500 में काम करना है तो करो अन्यथा जाओ। आज 16 नवम्बर तक हम बाहर हैं और अब हम 50-60 मजदूर श्रम विभाग जा रहे हैं।"

इम्पीरियल ऑटो कामगार : "ओल्ड रेलवे स्टेशन माल गोदाम के सामने स्थित कम्पनी की मुख्य फैक्ट्री में 1990 के बाद किसी मजदूर को स्थाई नहीं किया है। यहाँ इस समय 100 स्थाई मजदूर और 8 ठेकेदारों के जरिये रखे 400 वरकर ***मारुति सुजुकी, महिन्द्रा ट्रैक्टर, रेलवे, सेना*** का काम करते हैं। सुबह 9 से साँय 5½, रात 8½-10½ तक तथा रात 8 से अगली सुबह 8 तक की दो शिफ्ट हैं। महीने में 80-110 घण्टे ओवर टाइम और ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को मात्र 8 रुपये प्रतिघण्टा की दर से भुगतान। अब फरीदाबाद में कम्पनी की 16 फैक्ट्रियाँ हैं और लखनऊ, पुणे आदि में भी फैक्ट्रियाँ हैं।"

आई बी जी ग्रुप 4 वरकर : "48 डी एल एफ इन्डस्ट्रीयल एस्टेट स्थित फैक्ट्री में 200 पुरुष मजदूर सुबह 7 से रात 9 की और 300 महिला मजदूर सुबह 7½ से रात 7 की शिफ्टों में ***ग्रुप 4, मैट्रो रेल, रेलवे*** के लिये वर्दियों की सिलाई करते हैं। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से है पर हर रोज 12-14 घण्टे उत्पादन में जुतने से भारी परेशानी होती है।"

डिलाइट प्रोसेसिंग मजदूर : "प्लॉट 302 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2500 और कारीगरों की 3200-3500 रुपये। अस्सी मजदूरों में 20 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ.।"

वी एन जी श्रमिक : "प्लॉट 4 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 500 मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती हैल्परों की तनखा 3200 और ठेकेदारों के जरिये रखों की 2800-3000 रुपये। हैल्परों की ई.एस.आई. है पर पी.एफ. नहीं।"

रामकृष्णा कामगार : "307 ओल्ड रेलवे फाटक स्थित नट-बोल्ट फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2300 रुपये। सुबह 8½ से रात 9 की शिफ्ट और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

शाही एक्सपोर्ट वरकर : "12/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से साँय 5½ की शिफ्ट है पर रात 1 बजे तक रोकते हैं। महीने में 100-150 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से।"

रेमको स्टील मजदूर : "प्लॉट 72 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में 300 मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 3500 रुपये।"

पेस एग्जिम श्रमिक : "158 डी.एल.एफ. फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2000-2200 और ऑपरेटरों की 2500-3300 रुपये है जबकि हस्ताक्षर सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन पर करवाते हैं। प्रतिदिन सुबह 9 से रात 11 की ड्युटी। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

ब्रॉन लैबोरेट्रीज कामगार : "13 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में चार में से तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 200 मजदूरों को 8 घण्टे के 100 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। महिला मजदूरों की दिन की ड्युटी। गोली और कैप्सूल विभाग में 50 मजदूर रात 7 से अगली सुबह 8½ की, 13½ घण्टे की शिफ्ट में काम करते हैं। इन्जेक्शन विभाग में 25 मजदूर रात 10 से अगली सुबह 8-9-10 तक काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

एस पी एल वरकर : "प्लॉट 7 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। रोज 12 घण्टे पर 30 दिन के 3900 रुपये।"

टोयोमा मजदूर : "प्लॉट 377 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। एक शिफ्ट 12 घण्टे की, ओवर टाइम सिंगल रेट से।"

श्री श्याम इन्डस्ट्रीज श्रमिक : "प्लॉट 6, नोरदर्न कम्पलैक्स, 20/3 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2200 और ऑपरेटरों की 3000 रुपये। एक शिफ्ट 12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। यहाँ ***ओरियन्ट पँखों*** के पुर्जे बनते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. 40 मजदूरों में किसी की नहीं।"

डी एस बुहीन कामगार : "58 बी इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2700 और ऑपरेटरों की 3600 रुपये। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, रविवार को भी। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। दो सौ मजदूरों में 10-12 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं।

"डी एस बुहीन की 88 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 11 और 13 घण्टे की दो शिफ्ट हैं – सुबह 8 से साँय 7 और साँय 7 से अगले रोज सुबह 8 तक। ओवर टाइम सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 2400-3000 और ऑपरेटरों की 3500 रुपये।"

शशि सर्विस वरकर : "प्लॉट 5 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2200 और ऑपरेटरों की 3200 रुपये – जिन 6 की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं उनकी तनखा 3510 रुपये। सुबह 8½ से रात 8 की शिफ्ट, ओवर टाइम सिंगल रेट से। यहाँ ***ओरियन्ट पँखों*** के पुर्जे बनते हैं।"

वेब टेक श्रमिक : "प्लॉट 151 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में ***होण्डा, यामाहा, जे सी बी*** के पुर्जे बनाते 300 मजदूरों में 2-4 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती हैल्परों की तनखा 3000 और ठेकेदारों के जरिये रखों की 2800 रुपये। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम सिंगल रेट से।"

स्तुति मैटल कामगार : "6 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3200-3600 रुपये। एक शिफ्ट 12 घण्टे की, ओवर टाइम सिंगल रेट से।"

हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा प्रतिमाह इस प्रकार हैं : अकुशल मजदूर (हैल्पर) 3914 रुपये (8 घण्टे के 151 रुपये); अर्धकुशल अ 4044 रुपये (8 घण्टे के 156 रु.); अर्धकुशल ब 4174 रुपये (8 घण्टे के 161 रुपये); कुशल श्रमिक अ 4304 रुपये (8 घण्टे के 166 रुपये); कुशल श्रमिक ब 4434 रुपये (8 घण्टे के 171 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 4564 रुपये (8 घण्टे के 176 रुपये)।

गुड़गाँव.... (पेज तीन का शेष)

सरगम एक्सपोर्ट कामगार : "152 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में महीने में 150 घण्टे ओवर टाइम – भुगतान दुगुनी दर से। सुपरवाइजर हर महीने तनखा के समय 300 रुपये लेते हैं और नहीं दो तो गाली देते हैं, बहुत परेशान कर नौकरी छोड़ने को मजबूर करते हैं। तनखा व ओवर टाइम में 200-300 रुपये की गड़बड़ी भी की जाती है।"

मनीसेन्ट्रा वरकर : "212 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सिलाई कारीगरों को सुबह 9½ से साँय 6½ तक के 140-150 रुपये और हैल्परों को महीने के 2800 रुपये। रोज साँय 7½ तक ड्युटी, रात 12 तक रोक लेते हैं। रविवार को भी काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. 300 मजदूरों में किसी की नहीं। तनखा हर महीने देरी से – अक्टूबर की 15 नवम्बर को दी। अक्टूबर में किये ओवर टाइम के पैसे आज 30 नवम्बर को देंगे। कम्पनी का सूत्र है: भगाओ मत, खुद भाग जायेंगे।"

गुड़गाँव में मजदूर

एवरी डेनिसन मजदूर : "94 उद्योग विहार फेज-1 स्थित चमकती फैक्ट्री में हम 40 को कम्पनी ने स्वयं भर्ती किया पर हमें ठेकेदार के जरिये रखे वरकर कहती है। कम से कम 12 वीं किये हैं और हम से मशीनें चलवाते हैं तथा 12 अकों के बारकोड वाले स्टीकर छँटवाते हैं फिर भी हमें अकुशल श्रमिक के लिये सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन, 3914 रुपये देते हैं। तीन शिफ्ट हैं 8-8 घण्टे की पर हम को जबरन 16-24 घण्टे रोक लेते हैं। महीने में 100-150 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान दुगुनी दर से पर 20-30 घण्टे खा जाते हैं। मैनेजर गाली देते हैं। सोलह घण्टे रोकने पर भोजन देते थे पर तीन महीने से देना बन्द कर दिया है। जबरन ओवर टाइम पर एतराज करने पर दो महीने पहले 10 को निकाला और तीन दिन पहले 2 को निकाल दिया। निकाले हुओं को 3-4 दिन किये काम के पैसे नहीं दिये, बोनस नहीं दिया — बोले कि ठेकेदार देगा और एक फोन नम्बर दिया। ठेकेदार फोन पर बोला कि पैसे कम्पनी देगी..... काम का जोर बहुत ज्यादा है, डाइयाँ तोड़ने का कठिन कार्य करने के लिये कम्पनी 50-60 मजदूर बाहर से मँगा लेती है और उन्हें 12 घण्टे के 150 रुपये, भोजन अवकाश नहीं, चाय ब्रेक नहीं, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

कैलाश रिबन श्रमिक : "403 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2200-2700 और कारीगरों की 3500-6000 रुपये। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की। छुट्टी के दिन साइकिलें अन्दर रखवा, बाहर ताला लगा, अन्दर काम करवाते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। झपकी लेने की शिकायत पर 6-8-10 घण्टे के पैसे काट लेते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. 350 मजदूरों में 100 की ही।"

ऋद्धिमा ओवरसीज कामगार : "उद्योग विहार फेज-5 में प्लॉट 662 तथा 790 में फैक्ट्रियों वाली कम्पनी ने डुण्डाहेड़ा में एफ डी के नाम से 150 मशीनें स्थापित की। पीस रेट पर काम कर रहे 90 सिलाई कारीगरों के दो महीनों के पैसे बकाया हो गये तो जुलाई 08 में वे एक यूनियन के पास गये। तीन महीने श्रम विभाग के चक्कर लगाये और एक बार उप श्रमायुक्त फैक्ट्री भी आई। मजदूरों को किये काम के तीन लाख रुपये नहीं मिले। स्टाफ के 12 लोगों की ढाई लाख रुपये तनखा भी बकाया हो गई। पैसे माँगने जाने वालों को भगाने के लिये कम्पनी ने गेट पर दो पहलवान रखे हैं। कम्पनी की तीनों फैक्ट्रियों में बहुत मजदूरों के बहुत पैसे बकाया हैं।"

लियरा इन्डस्ट्रीयल वरकर : "155 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में मैं, विनोद, 20.11.2002 को लगा था और 30.11.2006 को नौकरी छोड़ी। कम्पनी ने 13.10.2007 को फण्ड निकालने का मेरा फार्म भरा पर भविष्य निधि कार्यालय ने गलतियाँ बता कर फार्म वापस भेज दिया। कम्पनी ने एक जगह मेरी जन्मतिथि 15.7.1969 तो दूसरी जगह 15.7.1987 भर दी थी। कई चक्कर काटने के बाद कम्पनी ने 18.8.2008 को मेरा फण्ड का फार्म फिर भरा पर इस बार भी भविष्य निधि कार्यालय ने गलतियाँ निकाल कर फार्म वापस भेज दिया... फार्म में एक जगह नाम विनोद वर्मा तो दूसरी जगह विनोद कुमार। कम्पनी की जानी-बूझी गलती अथवा लापरवाही और पी.एफ. कार्यालय द्वारा बाल की खाल निकालना मजदूरों के लिये परेशानी पर परेशानी लिये है। और फिर, फण्ड फार्म में भर्ती नवम्बर 2002 की जगह नवम्बर 2005 दिखा कर कम्पनी मेरी तीन वर्ष की पी.एफ. राशि को यूँ ही हड़प रही है।"

निओलाइट मजदूर : "396 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में महीने के तीसों दिन 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ***हीरो होण्डा, मारुति सुजुकी, टाटा*** 407 वाहनों की हैड लाइट बनती हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से।"

कुरुबॉक्स श्रमिक : "उद्योग विहार फेज-1 में 172 तथा 199 और मानेसर में 137 सैक्टर-4 स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में अक्टूबर की तनखा आज 30 नवम्बर तक नहीं दी है। इन फैक्ट्रियों में ***लक्की, डेविनस, फोसिल, सी के*** का चमड़े का काम होता है।"

गार्ड : "अनमोल टावर, सुखराली, गुड़गाँव में कार्यालय वाली ***एस डी बी सिस्को सेक्युरिटी*** कम्पनी गार्डों को 3600 रुपये तनखा देती है। साप्ताहिक छुट्टी नहीं देते, पूरे महीने 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। पता नहीं कम्पनी क्या हेराफेरी कर ई.एस.आई. व पी.एफ. के महीने में मात्र 156 रुपये काटती है।"

दी एम. एम. टूल्स कामगार : "43 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3000 और ऑपरेटरों की 3500 रुपये। दो शिफ्ट 10½-10½ घण्टे की, सिंगल रेट से 2 घण्टे का ओवर टाइम। ***मारुति सुजुकी*** कार के पुर्जे बनाते 90 मजदूरों में 5 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ.। छोड़ने पर 10 दिन किये काम के पैसे नहीं देते। गाली देते हैं। शौचालय बहुत-ही गन्दा।"

राधनिक एक्सपोर्ट वरकर : "215 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ से रात 10 तक रोज ड्युटी और रात ढाई बजे तक रोक लेते हैं। तनखा 26 की बजाय 30 दिन पर कर ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम करते हैं। रात 2½ तक रोकते हैं तब कैन्टीन में भोजन देते हैं पर वह खराब होता है और पेट भी नहीं भरता। काम करते 1200-1300 मजदूरों में से 50-60 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं।" ***(बाकी पेज दो पर)***

नीति क्लोथिंग मजदूर : "218 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में धागे काटने वाले मजदूरों की तनखा 2400-2500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। साल-भर हुआ, ठेकेदार 25 मजदूरों की एक महीने की तनखा ले कर भाग गया..... मजदूरों को पैसे नहीं मिले। कारीगरों की तनखा 4185 रुपये पर दोपहर तक काम समाप्त हो गया तो भगा देते हैं और 4 घण्टे किये काम के पैसे नहीं देते।"

दिल्ली.... *(पेज चार का शेष)*

वसन्त इण्डिया वरकर : "जी-4, बी-1 एक्सटैन्शन मोहन को-ऑप इन्डस्ट्रीयल एस्टेट, बदरपुर स्थित फैक्ट्री में सितम्बर और अक्टूबर की तनखायें आज 20 नवम्बर तक नहीं दी हैं।"

गार्ड : "383 गली नं. 3, महिपालपुर, दिल्ली में कार्यालय वाली ***ट्रिग सेक्युरिटी*** बड़ी सँख्या में कम्पनियों को सुरक्षा कर्मी प्रदान करती है। हम से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाते हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के 4500 रुपये देते हैं। तनखा देरी से — अक्टूबर का वेतन 22 नवम्बर को दिया। ई.एस.आई. व पी.एफ. के हर महीने 500 रुपये काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और नौकरी छोड़ने पर फण्ड के पैसे नहीं मिलते।"

शिवम् एक्सपोर्ट मजदूर : "ए-189 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में ***गैप*** का माल बनाते 1200-1300 मजदूरों में मात्र 50-60 की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। गेट पर कोई नाम नहीं है पर यहाँ तीन कम्पनियाँ बताते हैं। धागे काटने वाले मजदूरों की तनखा 2400 रुपये, सितारे-मोती लगाने वालों को 8 घण्टे के 90 रुपये, सिलाई कारीगरों को 8 घण्टे के 150 रुपये, सिलाई हैल्परों की तनखा 3200-3500 रुपये, चैकर-प्रेसमैन-स्पॉटर-फोल्डर-पैकर को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन। सिलाई वालों की ड्युटी सुबह 9 से रात 9 रोज और फिर रात 10 तक, अगली सुबह 5 तक रोक लेते हैं। फिनिशिंग में सुबह 9½ से रात 9 तक प्रतिदिन और फिर रात 12, अगली सुबह 5 तक रोकते हैं। सुबह 5 बजे छूटने पर फिर 9-9½ से ड्युटी। महिला मजदूरों को भी रात एक बजे तक रोक लेते हैं। रात 9 बजे बाद 1-2 घण्टे रोकने पर रोटी के लिये 13 रुपये तथा उस से ज्यादा रोकने पर 26 रुपये देते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और 9 से 9 में 3 घण्टे को ओवर टाइम कहते हैं। निर्धारित उत्पादन बहुत अधिक है — साहब लोग चिल्लाते हैं। डेढ-दो सौ महिला मजदूरों के लिये मात्र एक शौचालय है, लाइन लगी रहती है। कैन्टीन नहीं है, भोजन करने के लिये स्थान नहीं है। पीने का पानी खारा। महिला व पुरुष मजदूरों के हिलने-मिलने पर जनरल मैनेजर पुरुष मजदूर को दफ्तर में बुला कर गाली देता है, पीट देता है और महिला मजदूर को तुरन्त नौकरी से निकाल देता है।"

रॉयल स्टैग व्हीस्की गोदाम श्रमिक : "डी-ब्लॉक ओखला फेज-1 स्थित प्रायवेट गोदाम में सरकारी माल आता-जाता है। यहाँ 100 मजदूर दिहाड़ी पर काम करते हैं, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। पैसे महीने में ही मिलते हैं पर मासिक तनखा पर रखने की बजाय दिहाड़ी पर रखते हैं ताकि अधिकारी ज्यादा मजदूर दिखा कर जेब भर सकें। गाड़ी से माल उतारने वालों को प्रतिगाड़ी अनुसार और अन्दर काम करने वालों की दिहाड़ी 150 रुपये। काम बन्द कर 25 नवम्बर को दिहाड़ी 200 रुपये करने की माँग की — 170 रुपये पर समझौता हुआ।"

दिल्ली में मजदूर

कानून : ●37-40 दिन काम करने पर 30 दिन की तनखा, अगले महीने की 7-10 तारीख तक दे ही देना; ●8 घण्टे की ड्युटी, तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं, ओवर टाइम का भुगतान वेतन की दुगुनी दर से; ●दिल्ली, नोएडा, सोनीपत, बहादुरगढ, गुड़गाँव, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्रियों में हर मजदूर का कर्मचारी राज्य बीमा, ई.एस.आई. होनी चाहिये। मजदूर दो-चार दिन के लिये भर्ती की गई हो चाहे ठेकेदार के जरिये रखा गया हो – प्रत्येक मजदूर की ई.एस.आई. होनी चाहिये। फैक्ट्री में काम करते किसी मजदूर की ई.एस.आई. नहीं होने का मतलब है : कम्पनी तथा सरकार के अनुसार वह मजदूर फैक्ट्री में काम नहीं करता-करती।
●दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन प्रतिमाह इस प्रकार हैं : अकुशल श्रमिक 3953 रुपये (8 घण्टे के 152 रु.); अर्ध-कुशल श्रमिक 4119 रुपये (8 घण्टे के 159रु); कुशल श्रमिक 4377 रुपये (8 घण्टे के 169 रु)।

डिम्पल एक्सपोर्ट मजदूर : " बी-35 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में धागे काटने वाले मजदूरों को 8 घण्टे के 80 रुपये, सितारे-मोती लगाने वालों को 8 घण्टे के 120 रुपये, सिलाई कारीगरों को 8 घण्टे के 150-160 रुपये। सिलाई वालों की सुबह 9 से रात 9 की और फिनिशिंग वालों की सुबह 9 से रात 1 बजे की ड्युटी। साप्ताहिक छुट्टी नहीं, और त्यौहारी छुट्टी की दिहाड़ी काट लेते हैं। महिला मजदूरों को भी रात एक बजे तक रोकते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। पाँच सौ सिलाई कारीगरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। यही बात फिनिशिंग में। थोड़े-से चैकर आदि की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। बायर आते हैं तब खूब सफाई, बड़ी सँख्या में मजदूरों को बाहर कर कार्ड वालों को ही रखते हैं और कहते हैं कि पूछने पर तनखा 4700 रुपये बताना, कहना साँय 5½ छुट्टी हो जाती है, ओवर टाइम नहीं होता, 11 व 4 बजे चाय देते हैं....... जबकि 12 घण्टे में भी एक कप चाय नहीं देते, फैक्ट्री में कैन्टीन नहीं है। पीने का पानी खारा और कभी-कभी वह भी नहीं। शौचालय के लिये पास, चिक-चिक करते हैं।"

दिव्या गारमेन्ट्स श्रमिक : " आर जैड 176/1 गली नं. 1, तुगलकाबाद स्थित फैक्ट्री में कमीज तैयार करते 50 मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। कॉलर, जेब, बाजू बाहर से आते हैं और सिलाई कारीगर इन्हें पीस रेट पर जोड़ते हैं। हैल्पर को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 3200-3500 रुपये। प्रेस कर पैक करने वालों को 11 घण्टे रोज पर 26 दिन में 4000 रुपये।"

विक्टर इलेक्ट्रोनिक्स कामगार : " बी-86 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 200 महिला तथा 300 पुरुष मजदूरों की तनखा 2300 रुपये। बीस वर्ष से काम कर रहे 2-3 की तनखा 4500 रुपये और उनकी ही ई.एस.आई. व पी.एफ. है। बाकी 500 मजदूरों में 100 की तनखा से ई.एस.आई. के 40 रुपये काटते हैं – पी.एफ. किसी का नहीं है। यहाँ निर्यात के लिये टी वी, रेडियो के पुर्जे बनते हैं। जाँच के समय सफाई – आने वाले लोग मजदूरों से बात ही नहीं करते। सुबह 9 से रात 8½ की ड्युटी, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

(बाकी पेज तीन पर)

लन्दन से पत्र

..... मजदूर सप्लाई करने वाली एक एजेन्सी के जरिये मैं नगर परिषद में अस्थाई सफाई कर्मी के तौर पर लग गया हूँ। मेरा कार्य गलियों में झाडू लगा कर कूड़ा एकत्र करना है जिसे ट्रक पर लगा वैक्यूम क्लीनर फिर अपने में खींच लेता है।

सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन से कम, 5½ पाउण्ड प्रति घण्टा नौकरी पर रखते समय एजेन्सी ने लालच दिया कि नगर प्ररिषद हमें अपना कर्मचारी बना सकती है। इस समय 8 घण्टे प्रतिदिन पर सप्ताह में 5 दिन कार्य करने पर मेरे महीने में करीब 750 पाउण्ड बनते हैं, वर्ष में 9000 पाउण्ड – जबकि नगर परिषद द्वारा रखे सफाई कर्मी को वर्ष में 18,000-20,000 पाउण्ड मिलते हैं। एजेन्सी ने कहा कि 6 महीने में वर्दी मिलेगी पर 2-3 वर्ष से कार्य कर रहों ने मुझे बताया है कि उन्हें अभी तक वर्दी नहीं मिली है। लन्दन में एक कमरे का किराया 80-100 पाउण्ड प्रति सप्ताह है, महीने का 400 पाउण्ड के करीब। ऐसे में मैं 750 पाउण्ड प्रतिमाह तनखा में मात्र जिन्दा रह सकता हूँ।

बहुत लोग सप्ताह के सातों दिन काम करते हैं। कुछ लोग रोज दो शिफ्ट काम करते हैं। कल जिस ट्रक ड्राइवर के साथ मैंने काम किया वह पोलैण्ड में जन्मा था और उसने सप्ताह में 72 घण्टे कार्य किया – वह नशा करता है। लन्दन इस कम दिहाड़ी पर रखरखाव पर टिका है। बहुत बेरोजगारी है, प्रारम्भिक दिहाड़ी कम है, अपराध बहुत हैं। यह लोगों पर काफी दबाव बनाते हैं। और, बेतुकियाँ भी : बस और मैट्रो रेल महँगी हैं इसलिये मैंने एक पुरानी साइकिल 50 पाउण्ड में ली है पर उसे बस स्टॉप पर खुले में सुरक्षित रखने के लिये मुझे 100 पाउण्ड का अच्छा ताला लेना होगा। मुख्य सड़क जिस पर मैं झाडू लगाता हूँ उस पर पिछले माह गिरोह युद्ध में, गरीबी से जुड़े अपराध में 5 युवकों को गोली मारी गई। जिस बस्ती में मैं रहता हूँ वहाँ शनिवार व रविवार को गरीबी से जुड़े अपराधों के लिये पकड़े गये युवाओं को चिन्हित करते कपड़े पहना कर उन से झाडू लगवाई जाती है।

जिस ट्रक ड्राइवर के साथ मैं सामान्य तौर पर काम करता हूँ उसका जन्म अल्जीरिया में हुआ था। वह लन्दन के बहुत व्यस्त यातायात में ट्रक चलाता है, साथ ही वह मैकेनिकल ब्रुशों और वैक्यूम क्लीनर को ऑपरेट करता है। संग-संग वह मोबाइल पर मित्रों से बात करता है जिन से मिलने का समय उसके पास नहीं है। मैं झाडू लगाते हुये पैदल चलना चुनता हूँ क्योंकि यह विचार करने के लिये अधिक समय देता है। चूँकि सामान्य तौर पर आप अपने कमरे में ही झाडू लगाते हैं, अब झाडू लगाते समय मुझे महसूस-सा होता है कि मेरा कमरा फैल कर लन्दन नगर के हृदय तक आ गया है। पैदल चलना जाँचने-परखने के लिये भी अधिक समय देता है। लन्दन में भिखारी आमतौर पर बैंकों की नकद-भुगतान मशीनों की बगल में बैठते हैं। सफाई कर्मी को 'नगर कर्मी' होने का अहसास होता है और डाक कर्मी अथवा खुले में कार्य करते अन्य लोगों से अधिक आसानी से जुड़ सकते हैं। अकसर लोग रास्ता पूछते हैं। मुझे बहुत ज्यादा नहीं चलना पड़ता, दिन में कुल सात मील। कभी-कभी हमें ट्रक पर मैकेनिकल ब्रुश बदलने आदि कार्य करने होते हैं पर उनमें अधिक समय नहीं लगता। हम 8 घण्टे का कार्य 4 घण्टों में पूरा कर घण्टा-दो घण्टा कहीं बैठ लेते हैं और 6 घण्टे बाद मैं चल देता हूँ – पैसे 8 घण्टे के मिलते हैं। ट्रक ड्राइवर ऐसा नहीं कर सकते क्योंकि उन्हें ट्रक लौटाना पड़ता है – वे मशीन से बँधे हैं।

सब झाडू लगाने वाले 8 घण्टे पूरे होने से पहले चल देते हैं। जाँच दल लन्दन में चक्कर लगा कर सफाई के अंक देता है। हमारे क्षेत्र में 4 प्रतिशत कचरा बताया जो कि अच्छे अंक हैं पर मैनेजर लोगों के जल्दी चले जाने से नाराज है। एक मीटिंग जिसमें 30 झाडू लगाने वाले थे, मैनेजर बोला कि पिछले महीने आधे लोग समय से पहले चले जाते थे। मैनेजर ने पहले उत्पादन बोनस काटने की धमकी दी पर बोनस स्थाई मजदूरों को ही मिलता है। अनुशासनात्मक कार्रवाई की भी बात की। मुझे भय हुआ कि मैनेजर की बातों से ड्राइवर डर जायेगा पर वे मैनेजमेन्ट की बातें सुनने के आदी हैं। मीटिंग वाले दिन मैं और भी जल्दी चल दिया। भर्ती करने वाली एजेन्सी भी जल्दी चल देने की बात जानती है और इसे झाडू लगाने के कार्य को अच्छी नौकरी बताने के लिये इस्तेमाल करती है।

..... लीड्स नगर में हर घर से कूड़े के डिब्बे उठाने वाले और झाडू लगाने वाले मजदूरों ने वार्षिक वेतन में 5000 पाउण्ड की कटौती की धमकी के खिलाफ 11 सप्ताह हड़ताल की .... यूनियन ने उत्पादकता बढाने का समझौता किया है। ब्राइटन नगर में हर घर पर कूड़े के डिब्बे रखना समाप्त कर दिया है, अब 80 घरों को एक स्थान पर कचरा डालना पड़ता है। संकट के दृष्टिगत डाकखानों में उत्पादकता बढाने के विरोध में डाक कर्मियों ने हड़ताल की। टेस्को सुपरमार्केट में कैशियरों की आवश्यकता खत्म कर दी है – ग्राहक स्वय सामान की जाँच कर मशीन से भुगतान करें – एक सुपरवाइजर 5 मशीनें देखती-देखता है। अधिक बेरोजगारी, वेतन घटाने के लिये ज्यादा दबाव, अधिक अपराध।

..... लन्दन में इस समय 80 हजार फ्लैट खाली पड़े हैं। बेघर लोग समूहों में कब्जे करने लगे हैं.....

(एक पाउण्ड करीब 80 रुपये के बराबर)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011